© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

भवभूति की रचनाओं में प्रणय–सौन्दर्य

कर्मवीर शोधछात्र वी.वी.बी.आई.एस.एण्ड आई.एस. पंजाब विश्वविद्यालय,
साधु आश्रम, होशियारपुर।

महाकवि भवभूति संस्कृत–साहित्याकाश के दीप्तिमान नक्षत्र हैं। अपनी नाट्यकृतियों द्वारा अक्षय यश अर्जित करने वाले इस महाकवि को काव्य–जगत में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उनका पाण्डित्य तथा कवित्व अद्भुत है। उनकी मनोहर काव्यशैली में जहाँ करुण रस सहृदयों के हृदयों को आप्लावित करता है, वहीं मधुर शृंगार भी आनन्द से आन्दोलित करता है।

यदि भवभूति के प्रणय–चित्रण के विषय में कहा जाए तो यह अद्भुत गरिमा से पूर्ण है। भवभूति आदर्श प्रेम के व्याख्याता हैं। वासनामय कलुषित प्रेम उनकी रचना में नहीं है। उनकी दृष्टि में प्रेम बाह्य कारणों पर आश्रित न होकर आन्तरिक कारण पर स्थित होता है। सच्चा प्रेम सर्वदा एक–सा रहता है। भवभूति का प्रेम उदात्त, सौम्य, सभ्य, पवित्र, वासनामुक्त तथा एकरस है। सम्प्रति हम कतिपय उदाहरणों का समीक्षण करते हुए महाकवि के प्रणय–सौन्दर्य को समझने का यत्न करते हैं –

महाकवि भवभूति द्वारा रचित 'महावीरचरित' नाटक वीर रस प्रधान होने के कारण उसमें शृंगार और प्रेम के वर्णन को अधिक विस्तृत नहीं किया गया क्योंकि शृंगार का पल्लवन वीर रस नाटक में 'दोष' न बने, अतः उन्होंने महावीरचरित में शृंगार की ओर संकेत मात्र किया है, उसका विस्तार नहीं किया। महावीरचरित में राम और सीता का तथा लक्ष्मण और ऊर्मिला का प्रेम युगपत् प्रेम का उदाहरण है जहां प्रथम दर्शन में ही परस्पर प्रेम का प्रादुर्भाव होता है। इस नाटक में कवि ने अवसर निकालकर राम की विरहावस्था का यत्र–तत्र वर्णन भी किया है।[1] मालतीमाधव प्रकरण में प्रणय सौन्दर्य की छटा पूर्णतया विकसित हुई है। इसमें ही हमें पूर्वापर प्रेम के उदाहरण प्राप्त होते हैं। मालती के हृदय में माधव के दर्शन से[2] और मदयन्तिका के हृदय में मकरन्द के गुण–श्रवण से प्रेम उत्पन्न होता है।[3] वहीं मदनोद्यान में मालती के प्रथम दर्शन से माधव भी उसके प्रति आकृष्ट हो जाता है।[4] और मकरन्द व्याघ्र से मदयन्तिका के प्राणों की रक्षा करते समय उसके प्रथम दर्शन से ही उसमें आसक्त हो जाता है।[5] हृदय में प्रेम का बीजारोपण होने पर माधव का ध्यान मालती की विभिन्न शृंगारिक–चेष्टाओं पर रहने लगता है। प्रेम–व्यापार में दृष्टि का बहुत महत्त्व होता है, इसलिए कवि ने मालती के कटाक्षों का वर्णन चार पद्यों में किया है।[6] प्रेम की प्रारम्भिक अवस्था में माधव की मनःस्थिति का सुन्दर चित्रण द्रष्टव्य है –

परिच्छेदव्यक्तिर्न भवति पुरःस्थेऽपि विषये
भवत्यभ्यस्तेऽपि स्मरणमतथाभाविरसम्।
न सन्तापच्छेदो हिमसरसि वा चन्द्रमसि वा

1. महावीरचरित, 5/20–24
2. मालतीमाधव, 1/18, पृ. 63
3. मालतीमाधव, 3 पृ. 105
4. मालतीमाधव, 3, पृ. 111
5. मालतीमाधव, 4, पृ. 147
6. मालतीमाधव, 1/28–31